मानुषखोर इतिहास के रास्ते मनुष्य के भविष्य की एक ऐसी यात्रा है जिसे समझदार लोग सभ्यताओं की टकराहट से जोड़ेंगे परंतु आदमी की छोटी-छोटी ज़रूरतों पर जैसे किसी दूसरी ही ताकत का कब्ज़ा है। इतिहास में उसे पराशक्ति कहकर आदमी के अशक्त और अकेले होने को दुर्निवार ठहराया गया था। हमारे वर्तमान में हम उसे राजनीतिक चालों की गाथा में टोहते हैं। अब धीरे-धीरे स्पष्ट हो रहा है कि कोई दुष्चक्र है जो दुनिया के ज्यादातर लोगों को दारुण स्थितियों में जीने के लिए विवश करता है।

मानुषखोर इस लिहाज से एक सीधी-सादी कथा है पर अपनी बुनावट में वह उन जटिलताओं को व्यक्त करने से परहेज़ नहीं करती जिनकी वजह से सत्ताएं आदमी को बांटने, उसे तोड़ने तोड़ने के अपने अदृश्य अभियान में लगी रहती हैं।

क्या हमारा वर्तमान सचमुच नरभक्षियों से पटा पड़ा है? राजनीतिक वर्चस्व मानुषखोर है। तमाम तरह की विनाशलीलाओं के लिए किसी दूसरे को ज़िम्मेदार ठहराकर अपनी भूमिकाओं से पल्ला झाड़ने वाली यह नई सांस्कृतिक बिरादरी किस तरह से पर्यावरण को क्षत-विक्षत कर समूची पीढ़ियों को मनोरुग्णता के धार्मिक धड़ों में शामिल होने के लिए मजबूर कर रही है?

इतिहास, पुराकथाएं, लोकचर्याएं काल्पनिक लगने लगी हैं—सभ्यता के नए संतरण की दहलीज पर मानुषखोर अवतरित हो रहा है…।

साभार : आवरण चित्र
श्याम शर्मा